Item Code: 645 Participant Code: 108

कोविड काल में बदला समाज

→ रूपरेखा

1) कोविड और समाज
2) समाज में आया बदलाव
3) परिवर्तन के गुण और दोष - विद्यार्थी जीवन में
4) परिवर्तन से वापस आता हुआ समाज
5) कोरोणा काल का प्रतिरोध मार्ग
6) बदला के वक्त घर में
7) उपसंहार

* कोविड और समाज

कोविड..... इस छोटा सा नन्हा सा प्राणी ने इस धरती पर एक ताण्डव ही कर लिया। इसको कोविड-19 भी कहते है। पूरा मानव समाज को ही इसने अपने बन्धन में कर लिया। करोडों का जीव इसने छीन लिया। चीन देश के वुहान से फैला हुआ यह कोविड पूरे धरती में फैल गया था। इसने

पर समाज को हि अपनि मर्ज़ी से बदल लिया 2020 साल भर इसने छीन लिया। इस समाज में कोरोणा के वजह जो परिवर्तन आये है चलिए इसको देखते है।

*समाज में आया बदलाव

एक आदमी का जीवन में सबसे अमूल्य काल है बचपण पर कोरोणा के काल में बच्चों को घर में हि बैठना पड़ा और वे अपने दोस्तो से नहि मिल पाए। डाक्टर, नर्स, आदि आरोग्य मेखला में काम करणे वालों को अपना जान हि त्याग करना पड़ा दिन-रात काम करणा पड़ा। कोविड्कालके 'सूपरहिरो' बनगये यह लोग से हमको सदा स्मरणा चाहिए इनको मत भूलना चाहिए। इस कोविड्कालमें हम सब को घर बैठना पड़ा। कुछ लोगको काम छोटदेना पड़ा और कुछ लोग मर गये। यह सब हमकेलिए नये चिज़ थे। हमें मास्क का इस्तमाल करना पड़ा। बार बार हाथ साफ करणे का आदेश मिला। क्वारणटिन में बैठना पड़ा। दूर देशों में फंस गये। ऐसे बहुत कश्टताओं का सामना

करना पडा । सामाजिक प्राणी नामक मानव को समाज से कोई संपर्क नहीं हुआ । इस कोरोणा ने समाज के सारे विभाग को हि अपने तबाहि के लेहरों में अपना गुलाम बनालिया । और सिर्फ आरोग्य मेखला हि नहीं है पुलिस जैसे सामूहिक प्रवर्तकों भी इस ज़माने में हमारे मदद कि थि ।

परिवर्तन के गुण और दोष - विद्यार्थी जीवन में

* विद्यार्थी जीवन में यह बिमारी के वजह बच्चों को भी कुछ कष्टतावों कि सामना करना पडा । कोरोणाकाल में बच्चों का पढ़ाइ ऑफलैन से ऑनलैन में बदलगया । यह बदलाव के कारण सारे बच्चों के हाथ में आया मोबैल फोण नामक भूत । जीस भूत के कारण बच्चों ने अपना जीवन बिगाड दिया, कि जीस भूत ने बच्चों को अपना गुलाम बनालिया जीस भूत कोरोणा से भी खतर्णाक है । पर कुछ बच्चों ने इस भूत को अपना एक अच्छा दोस्त बनालिया और वह बच्चे अब उन्नती को छूरह हैं । वह बच्चे टेकनिकली बहुत आगे बढ गये और फोण का सदउपयोग किया । पर कुछ

बच्चों ने साथी बनालिया पर उस साथी उसका स्वातक बन गया । गें, नवमाध्यम और बहुत सारे बुरे चीसों के जालमें फँस कर अपना जीवन बिगाड दिया । अब इन बच्चों अलावा को मोबइल ~~के अलावा जीना भि नहीं है~~ । हम यें कह सकते हैं कि एक अणु और एक फोण ने मिलकर ~~अपना बच्चों~~ को बिगाड लिया । कोरोणा कालमें बच्चों को अपनी विद्यालय जिवन, दोस्तों के सालवाले बाज़ा, छोटी-छोटी शरारतें जैसी बहुत चीज़ का नष्ट हुआ है ।

* परिवर्तन से वापस आता हुआ समाज ।

पुराने काल में माँ बाप बच्चों को खाना खीलाने के लिए चिडिया, चाँद, तारा, आसमान, तोता, सूरज, आसमान आदि चीज़ें दिखाते थे पर अब सबकुछ बदलगाया है अब फोण के इस्तमाल करते है अब तो अभी के अभी पैदा हुआ बच्चा भी फोण का इस्तमाल करता है यह सब परिवर्तन को लाने में कोविड का बडा सानिध्य है । वाक्सीन के आने के बाद कोविड की बंधन से हम आदा तरह मोचित हुए हैं ।

और अभ भि मोचित होने के परिश्रम में हि है। अब स्कूल वापस खुल गया है, कोरोणा को अपने नियन्त्रण में रख लिया है। वापस सामाजिक प्राणि समाजसे संपर्क में आगया है, मास्क का इस्तमाल कम हो गया है। तीन तरंग बनके आय कोरोण को नियंत्रण में रह लिया है, यह सब दुनिया कि हर एक व्यक्ति के परिश्रम से हि हुआ है। 'Break the chain' सफल हो गया है। अब समाज आदा तरह पूर्व स्थिति में पहुच गया है। सब सुरक्षित रह सकते है।

* कोरोणाकाल का प्रतिरोध मार्ग

कोरोणाकाल में बहुत प्रतिरोध मार्ग थे उनमें से कुछ मार्ग यह है।

→ 'SMS' या सोप, मास्क और सानिटैसर का इस्तमाल
→ 'Social distancing' का उपयोग।
→ लोकडौण के समय घर में हि बैठना।
→ दूसरे लोगों से बहुत ज़्यादा संपर्क मत करना
→ दूसरों से बात करते वक्त 1m का दूरी रहना
→ बुखार, खाँसी, करदन में दुखी आदी के समय में

तुरंत डाक्टर का सहाय लेना।
→ कारोणा के रोगी से संपर्क कम रहना।
ऐसे बहुत चिजों का ~~पर~~ पालन करने से हम आदे तरह कारोण से बच सकते हैं। और वाक्सीन को सह वक्त पर लगाना भी जरूरी है।

* बदला के वक्त ~~में~~. घर में

बदला में हम लोग को घर बैटने व पडा न्या लोकडाण, क्वारणडीन, आदी के वजह से ज़्यादा वक्त घर बैडना ~~व~~ पडा तो हमे अपने परिवार के साथ ज्यादा वक्त बीतिने कि अवसर मिला अपने बच्चे, माँ-बाप, बीवि आदि परिवार के पात्रों को ज्यादा जानने और प्यार देने कि मौका मिला हमारे घर एक शास्त्रालय बनगया जहाँ हम नये नये ~~चीज~~ चीज़ को बनाने और ढूण्डने लगे और परीवार के साथ मजा लेने लगे। कोरोणा के पहले ऐसा अवसर कबि नहीं मिलता था। कोरोणा के पहले सब ~~कपनी~~ अपने - अपने काम में मगन रहते ~~व~~ थे पर अब ऐसा नहीं है।

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 645 Participant Code: 106.

* उपसंहार

कोरोणा ने हमारे जीवन में बहुत नये नये बदलाव लाए। अच्चे और बुरे यादें देदीया। हमें घर में बंद करलीया। अब हम इसके बंदनसे बहर आरहे है धीरे-धीरे वे जाने लगे है 2½ साल हमे बहत परीशानी किथी। हमारे समाज में परीवर्तन लादिया। घरवालों को अच्चीं तरह जानने का मौका दिया। समाज को अपनी गुडीया बनालिया था। अब धीरे-धीरे खतम होने लगा है। इस की वपसी कभी नहीं होने कि प्रर्थना और जीनोंका मृत्यु हुआ है अन्होंक स्मरण देकर। जीसने कोरोण को हराने के लिए प्रयत्न कि है उनको धन्यवाद देकर हमे दुनिया कि बलाई केलिए प्रर्थना करण चाहिए

शुभ

"कोरोण मुक्त दुनिया
स्वस्थ दुनिया"

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)